कर्तव्य बजट : रोजगार, संसाधन और विकास

देश की वित्त मंत्री, श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा 2026 के प्रस्तुत केन्द्रीय आम बजट कई मायनों में महत्वपूर्ण है। इसकी पड़ताल करे तो हम पाएंगे पिछले 12 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा केंद्रित निर्णयों के कारण भारत की अर्थव्यवस्था स्थिर विकास और कम मुद्रास्फीति के साथ लगातार बढ़ी है। प्रस्तावित बजट में रोजगार सृजन, कृषि उत्पादकता और घरेलू क्रय शक्ति के लिए सुधार लागू किए गए। 2025 में स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद 350 से अधिक सुधारों को लागू किया गया है। इनमें जीएसटी सरलीकरण, श्रम संहिताओं की अधिसूचना और अनिवार्य गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों को युक्तिसंगत बनाना शामिल है।

जीवन सुगमता-रिफॉर्म एक्सप्रेस को गति मिल रही है। सीमा शुल्क और अन्य अप्रत्यक्ष करों के साथ-साथ प्रत्यक्ष कराधान उपायों जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार लागू किए गए हैं। इन पहलों का उद्देश्य प्रक्रियाओं को सरल बनाकर और बोझिल नियमों को कम करके क्रमशः हमारे नागरिकों और व्यवसायों के लिए जीवन सुगमता और व्यापार सुगमता में सुधार करना है। विकसित भारत युवा नेता संवाद 2026 में प्रधानमंत्री के साथ कई नवीन विचारों को साझा किया गया। जिन्होंने कई प्रस्तावों को प्रेरित किया है, जिससे यह एक अद्वितीय युवा शक्ति-संचालित बजट बन गया है।

आर्थिक विकास-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार का 'संकल्प' गरीबों, वंचितों और वंचितों का समर्थन करना है। इस संकल्प को पूरा करने के लिए बजट 3 कर्तव्यों से प्रेरित है। उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाकर और अस्थिर वैश्विक गतिशीलता के लिए लचीलापन बनाकर आर्थिक विकास को तेज करना और बनाए रखना। अपने लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना और उनकी क्षमता का निर्माण करना। यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक परिवार, समुदाय, क्षेत्र और क्षेत्र की सार्थक भागीदारी के लिए संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों तक पहुंच हो। सबका साथ, सबका विकास और विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंचाना।

बायोफार्मा शक्ति-आर्थिक विकास को गति देने और बनाए रखने के लिए, बजट 6 क्षेत्रों पर केंद्रित है। रणनीतिक और सीमांत क्षेत्रों में विनिर्माण को बढ़ाना। भारत को एक वैश्विक बायोफार्मा विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए बजट में बायोफार्मा शक्ति (ज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल उन्नति के लिए रणनीति) की शुरुआत की गई है। जो घरेलू जीवविज्ञान और बायोसिमिलर उत्पादन के लिए 5 वर्षों में 10,000 करोड़ रुपये की पहल है। भारत सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 को उपकरणों और सामग्रियों के उत्पादन, भारतीय आईपी के पूर्ण स्टैक को डिजाइन करने और सेमीकंडक्टर्स की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए लॉन्च किया जाएगा।

विशेष सहायता-इलेक्ट्रॉनिक्स कलपुर्जों के विनिर्माण योजना के लिए परिव्यय बढ़ाकर 40,000 करोड़ रुपये करना। औद्योगिक क्षेत्रों की विरासत का कायाकल्प। बुनियादी ढांचे को एक शक्तिशाली बढ़ावा देना। वित्त वर्ष 2026-27 में बजट में सार्वजनिक पूंजीगत व्यय को बढ़ाकर 12.2 लाख करोड़ रुपये करने का प्रस्ताव है, जो अब तक का सबसे अधिक है। राज्यों को विशेष सहायता आवंटित करके सुधारों को लागू करने और उत्पादक खर्च में शामिल होने के लिए राज्यों को प्रोत्साहित करना।

मेडिकल हब-महिला सशक्तिकरण की दिशा में हर जिले में महिला छात्रावास की स्थापना। पांच आयुर्वेद संस्थान की स्थापना के तहत मेडिकल हब बनाना। आयुष मिशन को विशेष प्रोत्साहन। कैंसर के मरीजों को बजट में बड़ी राहत मिली। महंगी दवाइयों से हटा कर, अब सस्ता होगा इलाज। रेलवे के क्षेत्र में 2.78 लाख करोड़ का बजट। 7 बुलेट ट्रेन रेलवे कोरिडोर। प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' और दलहन एवं तिलहन के लिए आत्मनिर्भरता मिशन। किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपए का प्रावधान। गांवों को विकास का इंजन बनाने के लिए आवंटन। दिव्यांग जन कौशल विकास और प्रशिक्षण योजना लागू करना इत्यादि शामिल हैं। जैसे विकल्प देश को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प अवश्य पूरा करेंगे। जिसकी उम्मीद देशवासियों ने देश की सरकार से लगाई थी, जो प्रस्तुत बजट में दिखाई पड़ी।

(हेमेन्द्र क्षीरसागर, पत्रकार

भारत का बजट 2026-27

अनुशासन के साथ विकास को गति, इंफ्रास्ट्रक्चर पर ज़ोर और भविष्य की अर्थव्यवस्था की तैयारी

केंद्रीय बजट 2026-27, जो कर्तव्य भवन से पेश किया गया पहला बजट है और माननीय वित्त मंत्री का लगातार नौवां बजट है, यह साफ संदेश देता है कि तेज़ आर्थिक विकास और वित्तीय अनुशासन साथ-साथ चल सकते हैं। यह बजट वित्तीय संतुलन के रास्ते पर मजबूती से बना हुआ है। इसमें राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4.4% से घटकर 4.3% कर दिया गया है और कर्ज-से-जीडीपी अनुपात 56.1% से घटकर 55.6% हो गया है। इससे भारत वित्त वर्ष 2031 तक 50% (±1%) के लक्ष्य की ओर सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह सब मिलकर निवेशकों और बाजारों को यह भरोसा देता है कि देश की अर्थव्यवस्था स्थिर है और सरकार की नीतियाँ भरोसेमंद हैं।

इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास का सबसे बड़ा आधार बना हुआ है। सार्वजनिक कैपेक्स में करीब 12% की बढ़ोतरी कर इसे ₹12.2 लाख करोड़ किया गया है। इसका मकसद निजी निवेश को आकर्षित करना, उत्पादकता बढ़ाना और लॉजिस्टिक्स लागत कम करना है। बजट में वित्तीय बाजारों को और मजबूत करने के लिए संतुलित कदम भी उठाए गए हैं। इनमें डेरिवेटिव्स पर एसएसटी बढ़ाना ताकि जरूरत से ज्यादा सट्टेबाजी पर रोक लगे, आरईआईटी के जरिए पीएसयू संपत्तियों का मुद्रीकरण, बॉन्ड इंडेक्स डेरिवेटिव्स की शुरुआत, और कॉरपोरेट बॉन्ड्स के लिए बेहतर मार्केट-मेकिंग व्यवस्था शामिल है। इसके अलावा, गिफ्ट सिटी में आय पर कर छूट की अवधि 10 साल से बढ़ाकर 20 साल कर दी गई है, जिससे यह एफपीआई के लिए और ज्यादा आकर्षक बन जाएगी।

अर्बन फाइनेंस को मजबूती देने के लिए नगरपालिका बॉन्ड्स पर दोबारा जोर दिया गया है। साथ ही, विदेशी मुद्रा और पूंजी बाजारों में किए गए नियामकीय सुधारों से व्यापार करना आसान होगा और भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ाव और मजबूत होगा। इसके अलावा, एनआरआई को भारतीय शेयर बाजार में सीधे पोर्टफोलियो निवेश की अनुमति देकर लंबे समय के डायस्पोरा पूंजी को देश की विकास यात्रा से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह बजट भविष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसमें रणनीतिक और उभरते हुए क्षेत्रों—जैसे सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग, बायो-फार्मा, रेयर अर्थ्स, पर्यटन और टेक्सटाइल उद्योग को प्राथमिकता दी गई है। इन क्षेत्रों पर ज़ोर देकर सरकार का लक्ष्य इनोवेशन को बढ़ावा देना, निर्यात बढ़ाना और उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार पैदा करना है।

कुल मिलाकर, बजट 2026-27 में वित्तीय समझदारी, इन्फ्रास्ट्रक्चर के ज़रिये विकास, वित्तीय बाजारों को गहरा करना और भविष्य के लिए तैयार सुधारों का संतुलित मेल दिखता है। यह बजट विकसित भारत 2047 की दिशा में भारत की यात्रा के लिए एक मज़बूत नींव रखता है।

-एनएसई के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री आशीषकुमार चौहान

महिलाओं में पीसीओडी : हार्मोनल असंतुलन से आत्मचेतना, जीवनशैली, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक संरचना तक फैली एक मौन महामारी

पीसीओडी अर्थात पोलिसिस्टिक ओवेरियन डिजीज केवल एक चिकित्सकीय शब्द नहीं है, बल्कि यह आधुनिक नारी जीवन की जटिलताओं, दबावों, असंतुलनों और उपेक्षित आवश्यकताओं का जीवंत प्रतिबिंब है। यह रोग नहीं, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जो शरीर के भीतर धीरे-धीरे विकसित होती है और बिना शोर किए महिला के संपूर्ण अस्तित्व को प्रभावित करती है। हार्मोनल असंतुलन के रूप में जन्म लेने वाली यह समस्या केवल अंडाशयों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि शरीर की जैविक संरचना, मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक भूमिका और आत्मपहचान तक को प्रभावित करती है। पीसीओडी उस मौन पीड़ा का नाम है, जिसे महिलाएँ सहती हैं, परंतु समाज उसे समझ नहीं पाता, और कई बार महिला स्वयं भी उसे पहचान नहीं पाती।

आधुनिक जीवनशैली ने स्त्री शरीर की प्राकृतिक लय को तोड़ दिया है। प्रकृति ने स्त्री शरीर को एक विशिष्ट जैविक संतुलन दिया है – जिसमें हार्मोन, चक्र, ऋतु, नींद, पोषण और मानसिक शांति का गहरा सामंजस्य होता है। किंतु आज का जीवन इस सामंजस्य को लगातार तोड़ रहा है। देर रात तक जागना, अनियमित भोजन, पोषणहीन आहार, रासायनिक युक्त खाद्य पदार्थ, लगातार स्क्रीन एक्सपोज़र, शारीरिक श्रम का अभाव, मानसिक तनाव, प्रतियोगिता, असुरक्षा और सामाजिक दबाव – ये सभी मिलकर शरीर की आंतरिक व्यवस्था को अव्यवस्थित कर देते हैं। इसी अव्यवस्था से जन्म लेता है हार्मोनल असंतुलन, और इसी असंतुलन की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति पीसीओडी के रूप में दिखाई देती है।

जब शरीर में इंसुलिन रेजिस्टेंस बढ़ता है, तो केवल शुगर मेटाबॉलिज्म ही प्रभावित नहीं होता, बल्कि पूरा हार्मोनल नेटवर्क असंतुलित हो जाता है। एंड्रोजन हार्मोन का बढ़ना, एस्ट्रोजन-प्रोजेस्टेरोन संतुलन का बिगड़ना और अंडोत्सर्जन प्रक्रिया का बाधित होना – ये सभी प्रक्रियाएँ धीरे-धीरे स्त्री शरीर को उस स्थिति में पहुँचा देती हैं जहाँ पीसीओडी केवल एक मेडिकल कंडीशन नहीं, बल्कि एक स्थायी जीवनशैली संकट बन जाती है। यह संकट शरीर में सिस्ट के रूप में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास के टूटने, स्त्रीत्व की असुरक्षा, मातृत्व के भय और सामाजिक अस्वीकार्यता के डर के रूप में प्रकट होता है।

पीसीओडी का सबसे गहरा आघात महिला की आत्मछवि पर पड़ता है। जब शरीर बदलता है, वजन बढ़ता है, चेहरे पर मुंहासे आते हैं, बाल झड़ते हैं, चेहरे पर अनचाहे बाल उगते हैं, तब समस्या केवल शारीरिक नहीं रहती – वह मानसिक और भावनात्मक संकट बन जाती है। महिला अपने ही शरीर से अजनबी होने लगती है। वह स्वयं को समाज की सौंदर्य-परिभाषाओं से बाहर महसूस करने लगती है। यह स्थिति धीरे-धीरे आत्मग्लानि, हीनभावना, सामाजिक अलगाव और अवसाद की ओर ले जाती है। पीसीओडी केवल हार्मोन का असंतुलन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का विघटन भी है।

प्रजनन स्वास्थ्य के स्तर पर पीसीओडी स्त्री जीवन की सबसे संवेदनशील परत को प्रभावित करता है। मातृत्व को लेकर समाज की अपेक्षाएँ, पारिवारिक दबाव, और स्वयं महिला की आंतरिक इच्छा – इन सबके बीच जब गर्भधारण में कठिनाई आती है, तो पीसीओडी केवल एक चिकित्सकीय समस्या नहीं रहती, बल्कि एक गहरी मानसिक पीड़ा बन जाती है। महिला स्वयं को अधूरा समझने लगती है, दोषी महसूस करने लगती है, और कई बार सामाजिक दृष्टि से स्वयं को असफल मानने लगती है। यह मानसिक बोझ किसी भी दवा से अधिक गहरा होता है।

दीर्घकालिक दृष्टि से पीसीओडी एक भविष्यगत संकट भी है। यह केवल वर्तमान की असुविधा नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों की बीमारियों की नींव है। मधुमेह, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मेटाबॉलिक सिंड्रोम, मोटापा और हार्मोनल विकार – ये सभी पीसीओडी की छाया में पनपते हैं। यदि समय रहते इसे केवल दवाओं से नहीं, बल्कि जीवनशैली परिवर्तन से नहीं रोका गया, तो यह समस्या पीढ़ियों तक चलने वाला स्वास्थ्य संकट बन सकती है।

समाधान केवल चिकित्सा नहीं है, समाधान चेतना है। समाधान जीवनशैली का पुनर्निर्माण है। समाधान शरीर के साथ पुनः संवाद स्थापित करना है। योग, ध्यान, संतुलित आहार, प्राकृतिक जीवन, मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और आत्मस्वीकृति – ये सभी पीसीओडी के उपचार नहीं, बल्कि पीसीओडी की जड़ पर कार्य करने की प्रक्रियाएँ हैं। चिकित्सा विज्ञान शरीर को संतुलित करता है, लेकिन जीवनशैली और चेतना आत्मा को संतुलित करती है। जब दोनों का समन्वय होता है, तभी वास्तविक उपचार संभव होता है।

पीसीओडी पर बात करना केवल स्वास्थ्य पर बात करना नहीं है, यह स्त्री जीवन की संरचना पर बात करना है। यह समाज की अपेक्षाओं, जीवनशैली की दिशा, मानसिक दबावों और सांस्कृतिक ढाँचों पर प्रश्न उठाना है। यह लेख केवल जानकारी नहीं, चेतना का आह्वान है – कि स्त्री शरीर कोई मशीन नहीं है, वह संवेदना है, लय है, संतुलन है और प्रकृति है। जब हम इस प्रकृति के विरुद्ध जीवन जीते हैं, तो पीसीओडी जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं।

अंततः पीसीओडी कोई शाप नहीं, कोई दोष नहीं, कोई कमजोरी नहीं है। यह शरीर का संदेश है। यह संकेत है कि अब जीवन को धीमा करना होगा, सरल बनाना होगा, संतुलित करना होगा। यह स्त्री को स्वयं से जोड़ने का आह्वान है। जब महिला अपने शरीर को समझती है, अपने मन को सुनती है और अपने जीवन को संतुलन की ओर ले जाती है, तब पीसीओडी केवल एक चिकित्सकीय शब्द बनकर रह जाता है – जीवन का सत्य नहीं। जीवन का सत्य तब स्वास्थ्य, संतुलन, शांति और आत्मचेतना बन जाता है।

डॉ. भाव्यासिंह / डॉ. सुमित चौहान (लेखनी से)

शिवालिक पहाड़ियों पर स्थित मां नैणादेवी शक्तिपीठ

जिंदगी के खूबसूरत पल हमेशा सहेज कर रख लेने चाहिए ।

जिंदगी एक बहता हुआ दरिया है जिसका पानी कभी मुड़कर पीछे नहीं आता। इस बात को याद रखते हुए हमेशा इस दरिया की हर लहर को ज़हन में सहेज लेना भी एक हुनर है।

हमारे आसपास इतने खूबसूरत स्थान हैं जहां हम कुछ पल बिता कर सुकून की पोटली बांधकर सुशानुभूति कर सकते हैं।

इस सुखानुभूति की महक से मुद्दतों की थकान ऊब सब पलों में दूर हो सकती है।

जीवन की इसी थकान, इसी ऊब को दूर करने के लिए यात्राएं सबसे खूबसूरत माध्यम हैं ।

यात्राएं यहां संस्कृति का आदान-प्रदान करती हैं वहीं मनुष्यता का विकास भी करती हैं और ज्ञानवर्धन भी। इस बार हमारी यात्रा का डेस्टिनेशन था मां नैणा देवी शक्तिपीठ।

बहुत दिनों से इच्छा थी इस शक्तिपीठ में माता के दरबार में माथा टेकने ने की सो इस बार 26 जनवरी 2026 को यह चाहत पूरी हो रही थी।

सुबह हम आठ बजे जोगिंदर नगर से मैं मेरी धर्मपत्नी आशा बेटी डॉक्टर शबनम और दामाद इंजीनियर राजेश और उनकी गुड़िया जीवा गाड़ी से नैणा देवी के लिए निकल पड़े। जोगिंद्रनगर से मंडी लगभग 60 किलोमीटर दूर है और नैणा देवी शक्तिपीठ जोगिंदर नगर से लगभग 160 किलोमीटर।

आजकल मंडी -जोगिंदर नगर रास्ते में फोरलेन का काम लगा हुआ है।

पहाड़ों का सीना चीर चीर कर फोरलेन बनाई जा रही है।टेक्नोलॉजी का कमाल देखिए बड़े-बड़े नालों में फ्लाई ओवर बन रहे हैं।

यह सारा मंजर अभी पधर से मंडी तक देखा जा सकता है ।ज़ोर-शोर से फोरलेन का काम चला हुआ है। आसपास कई घर जो सड़क के अगल-बगल थे या तो तोड़े जा रहे हैं या कुछ पूरी तरह तहस नहस हो गए हैं । पानी के पनिहार खत्म हो गए कई पुराने पेड़ फोरलेन की बलि चढ़ गए हैं।

विकास और विनाश का यह दृश्य किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को पीड़ा से भर सकता है । पर क्या करें। यदि यह नहीं होगा तो देश का विकास रुक जाएगा ऐसा कहा जाता है हमारे पॉलिसी मेकर्स के द्वारा। यद्यपि आदमी भी आज आरामदायक जीवन का इतना अभ्यस्त हो गया है कि उसे यह सब विनाश भी अपनी सुख सुविधा के लिए मंजूर है। विनाश को कम करके विकास का स्वप्न देखने का विकल्प अभी हमारे देश में इतना विकसित नहीं हुआ है। परंपरागत ढर्रे पर चलते हुए विकास की इबारतें लिखी जा रही हैं। होना तो यह चाहिए था कि यथार्थ में विकास के लिए पर्यावरण को बचाते हुए दूसरे विकल्प तलाशे जाते।

खैर , यात्रा की बात करते-करते विषय से भटक गए।बाई घंटे के सफर के बाद हम मंडी पहुंच गए। यहां से बिलासपुर 50 किलोमीटर है। मंडी के पास ही लगभग 15 - 20 किलोमीटर सुंदर नगर कस्बा है। परंतु अब फोरलेन बन जाने के बाद गाड़ियां लगभग शहर के बाहर से ही निकल जाती हैं।

खुली और खूब चौड़ी सड़कें और टनलों ने दूरियां कम कर दी हैं ।

सुबह ब्रेकफास्ट नहीं किया था इसलिए सुंदर नगर के पास हाईवे पर होटल में ब्रेकफास्ट किया । जबकि दोपहर के लिए हम खाना घर से ही ले आए थे।

लगभग 12:00 के आसपास हम स्वारघाट के पास कैंची मोड़ से हाईवे को छोड़कर शक्तिपीठ नैणा देवी के लिंक रोड पर आ गए थे । यह लिंक रोड लगभग 22 किलोमीटर का है। सड़क में कोई ज्यादा ट्रैफिक नहीं थी।

सड़क तो तंग थी लेकिन ट्रैफिक बहुत कम थी। जब चार-

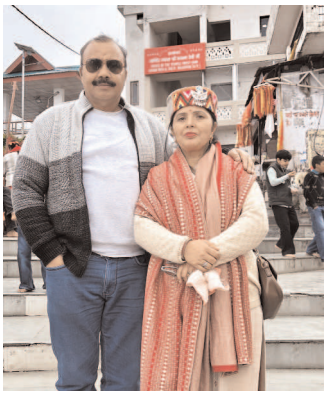

पांच किलोमीटर मंदिर दूर रह गया तो चौक पर नीचे आनंदपुर साहिब की ओर से आने वाली सड़क भी वहां मिल गई फिर वहां काफी ट्रैफिक था। हम 1:30 बजे नैना देवी मंदिर के नीचे कार पार्किंग में पहुंच गए थे। वहां अभी कार पार्किंग नहीं की थी तो राजेश ने किसी परिचित को फोन किया तो उसने बताया आप वहां नहीं ऊपर गुफा पार्किंग में गाड़ी ले आओ।

हमने पार्क वाले से पूछा तो उसने कहा गुफा पार्किंग आगे है। फिर हम गुफा पार्किंग तक गाड़ी ले आए ।वहां गाड़ी खड़ी करके लगभग 10 मिनट के पैदल रास्ते के बाद हम मंदिर परिसर में पहुंच गए थे ।

वहां पहले से ही सिक्योरिटी के किसी अफसर से राजेश ने बात की हुई थी । उन्होंने हमें वीआईपी रास्ते से साथ चलकर दर्शन करवा दिए ।

इससे हमें यह फायदा हुआ कि हमारा समय बच गया। वरना मंदिर में इतनी भीड़ थी के कम से कम दो-तीन घंटे हमें लाइन में खड़े होना पड़ता। माथा टेकने के पश्चात कुछ देर हमने मंदिर के परिसर में बैठ अद्भुत आध्यात्मिक वाइब्रेशंस का आनंद लिया। मन को अपूर्व शांति मिली। फिर वापस नीचे आकर भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया। वहां से निकले तो

बेटी ने कहा रज्जू मार्ग से एक चक्कर लगा लेते हैं ।185 रुपए टिकट प्रति व्यक्ति देकर हमने रज्जू मार्ग से 10 मिनट का आना-जाना किया सिर्फ रज्जू मार्ग का आनंद लेने के लिए। हम सब पहली बार इस तरह रज्जू मार्ग के इस उड़न खटोले में बैठे थे।

नैणा देवी शक्तिपीठ के इतिहास के बारे में पाठकों को बता दें

यह शक्तिपीठ हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले मेंशिवालिक पर्वत श्रेणी की पहाड़ियों पर, लगभग 1177 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है । जहां से गोविंद सागर झील व अन्य खूबसूरत पहाड़ियों का मनोरम दृश्य अनुपम सौंदर्य की अनुभूति करवाता है।

श्री नैणा देवी शक्तिपीठ भारत के प्रमुख 51 शक्तिपीठों में से एक है । मान्यता है जहां देवी सती के नैन (आँखें) गिरे थे।

शिव पुराण के अनुसार, जब भगवान शिव सती के पार्थिव शरीर को लेकर तांडव कर रहे थे, तब भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के अंगों को विभाजित किया था। माना जाता है कि माता सती के नेत्र यहाँ गिरे थे, जिससे यह स्थान नैणा देवी शक्तिपीठ के रूप में विख्यात हुआ।

एक अन्य कथा के अनुसार, राजा बीर चंद ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। यह स्थान मां सती की आँखों के गिरने और महिषासुर मर्दिनी के रूप में प्रसिद्ध है, जो श्रद्धालुओं के लिए गहरी आस्था का केंद्र है।

एक और मान्यता है कहा कि 'नैना' नाम के एक चरवाहे को एक पत्थर पर गाय के दूध गिराने की घटना के बाद यहाँ देवी के होने का संकेत मिला। जब राजा बीर चंद ने इस स्थान पर माता को सती के पिंड स्वरूप में स्थापित किया, तो इस स्थान को 'नैणा देवी' के नाम से जाना जाने लगा।

एक और मान्यता यह भी है कि देवी ने महिषासुर नामक राक्षस का वध किया था, जिसने देवताओं को त्रस्त कर रखा था। देवी ने युद्ध में उसे हराकर उसकी आँखें निकाल दी थीं, जिसे 'जय नैना' के जयकारे के साथ याद किया जाता है।

यह मंदिर शिवालिक पर्वत श्रेणी की पहाड़ियों पर, लगभग 1177 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जहाँ से गोविंद सागर झील का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

मंदिर के गर्भगृह में मुख्य रूप से तीन मूर्तियाँ हैं- दाईं ओर माता काली, मध्य में नैना देवी (नयन) और बाईं ओर भगवान गणेश की प्रतिमा। साथ ही, यहाँ एक प्राचीन पीपल का पेड़ भी स्थित है।

यह शक्तिपीठ हिमाचल प्रदेश की पांच शक्तिपीठों में से एक है। यूं तो हर समय यहां बहुत भीड़ होती है परंतु नवरात्रों के दौरान यहां विशेष भीड़ होती है। जब हम गए तब गुप्त नवरात्रि चल रहे थे इसलिए मंदिर में काफी भीड़ थी।

हम मंदिर के नीचे पहुंचे तो वहां एक गुफा भी है। स्थानीय दुकानदारों ने बताया कि आपका वहां बहुत समय लग जाएगा अंदर बहुत तंग जगह है इसलिए आप न ही जाएं तो बेहतर है। बहुत से लोग वहां जा रहे थे । परंतु समय अभाव के कारण हम वहां नहीं जा पाए।

उसके पश्चात हम वापस गाड़ी में आ गए और जोगिंदर नगर की तरफ चल पड़े अब तक दिन के 4:30 बज गए थे।

160 किलोमीटर की इस शक्तिपीठ की यात्रा करके हम रात 9:00 बजे जोगिंदर नगर वापिस पहुंच गए थे।

अशोक दर्द
डलहौजी चंबा
हिमाचल प्रदेश